Q. No. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

भारत प्राचीन काल से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है। भारतीय सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ और कृषि ने ही लोगों को स्थायी जीवन, भोजन तथा आर्थिक सुरक्षा प्रदान की। आज भी कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। यद्यपि औद्योगीकरण और सेवा क्षेत्र का विकास तेजी से हुआ है, फिर भी कृषि का महत्व कम नहीं हुआ है। भारत की विशाल जनसंख्या के लिए खाद्यान्न उपलब्ध कराना, करोड़ों लोगों को रोजगार देना, उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराना, विदेशी मुद्रा अर्जित करना तथा ग्रामीण विकास को गति देना–ये सभी कार्य कृषि के माध्यम से ही संभव होते हैं।

कृषि का अर्थ केवल खेतों में फसल उगाना नहीं है, बल्कि इसमें पशुपालन, डेयरी, बागवानी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, वानिकी तथा कृषि आधारित उद्योग भी शामिल हैं। इसलिए कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे व्यापक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व

1. रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत

भारत में कृषि सबसे अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करती है। करोड़ों किसान, खेतिहर मजदूर तथा कृषि से जुड़े व्यवसायों में लगे लोग अपनी आजीविका कृषि से प्राप्त करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही आय का मुख्य साधन है।

2. राष्ट्रीय आय (GDP) में योगदान

कृषि देश की राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यद्यपि सेवा क्षेत्र का योगदान अधिक हो गया है, फिर भी कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बनी हुई है। अच्छी कृषि उपज से आर्थिक विकास तेज होता है तथा ग्रामीण आय में वृद्धि होती है।

3. खाद्य सुरक्षा का आधार

भारत की विशाल जनसंख्या के लिए खाद्यान्न उपलब्ध कराना कृषि का सबसे बड़ा योगदान है। गेहूँ, चावल, दालें, मक्का, ज्वार, बाजरा, तिलहन, फल, सब्जियाँ, दूध तथा अन्य खाद्य पदार्थ कृषि से प्राप्त होते हैं।

यदि कृषि उत्पादन कम हो जाए तो खाद्यान्न संकट, महँगाई और कुपोषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

4. उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति

भारत के अनेक उद्योग कृषि पर निर्भर हैं।

जैसे–

कपड़ा उद्योग – कपास

चीनी उद्योग – गन्ना

जूट उद्योग – जूट

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग – फल एवं सब्जियाँ

वनस्पति तेल उद्योग – तिलहन

चाय एवं कॉफी उद्योग – चाय और कॉफी

तंबाकू उद्योग – तंबाकू

कृषि के बिना इन उद्योगों का विकास संभव नहीं है।

5. विदेशी मुद्रा अर्जित करने में योगदान

भारत चाय, कॉफी, मसाले, बासमती चावल, कपास, समुद्री उत्पाद, फल एवं सब्जियों का निर्यात करता है। इनसे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, जिससे आर्थिक विकास को सहायता मिलती है।

6. ग्रामीण विकास का आधार

भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है। कृषि से किसानों की आय बढ़ती है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, सिंचाई तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास होता है।

7. सहायक व्यवसायों का विकास

कृषि के साथ अनेक सहायक व्यवसाय विकसित होते हैं–

- पशुपालन
- डेयरी उद्योग
- मत्स्य पालन
- बकरी पालन
- मुर्गी पालन
- मधुमक्खी पालन
- बागवानी
- रेशम उत्पादन

इनसे किसानों की आय में वृद्धि होती है और अतिरिक्त रोजगार के अवसर मिलते हैं।

8. गरीबी एवं बेरोज़गारी दूर करने में योगदान

कृषि क्षेत्र के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ता है। इससे गरीबी कम होती है तथा लोगों का जीवन स्तर सुधरता है।

9. औद्योगिक विकास को गति

कृषि की समृद्धि से उद्योगों की मांग बढ़ती है। किसान ट्रैक्टर, उर्वरक, बीज, कृषि यंत्र, मोटरसाइकिल, कपड़े तथा अन्य वस्तुएँ खरीदते हैं। इससे उद्योग और व्यापार दोनों का विकास होता है।

10. व्यापार एवं परिवहन का विकास

कृषि उत्पादों के परिवहन, भंडारण, विपणन तथा निर्यात से सड़क, रेल, गोदाम, कोल्ड स्टोरेज तथा परिवहन सेवाओं का विकास होता है।

11. सरकार के राजस्व में योगदान

कृषि आधारित उद्योगों, निर्यात, परिवहन तथा व्यापार से सरकार को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों के माध्यम से राजस्व प्राप्त होता है।

12. पर्यावरण संरक्षण में योगदान

यदि वैज्ञानिक और टिकाऊ कृषि अपनाई जाए तो भूमि की उर्वरता बनी रहती है, जल संरक्षण होता है तथा जैव विविधता की रक्षा होती है।

13. सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

भारत के अधिकांश त्योहार कृषि से जुड़े हैं–

- बैसाखी
- पोंगल
- बिहू
- ओणम
- मकर संक्रांति
- नुआखाई

ये त्योहार किसानों के श्रम और कृषि की समृद्धि का प्रतीक हैं।

14. पशुधन के विकास में योगदान

भारत विश्व के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देशों में से एक है। कृषि के कारण पशुपालन को बढ़ावा मिलता है, जिससे दूध, घी, दही तथा अन्य दुग्ध उत्पादों का उत्पादन बढ़ता है।

15. संतुलित क्षेत्रीय विकास

कृषि के विकास से पिछड़े क्षेत्रों में रोजगार, आय, सड़क, सिंचाई तथा बाजारों का विकास होता है। इससे क्षेत्रीय असमानता कम होती है।

16. आर्थिक स्थिरता

अच्छी कृषि उपज से महँगाई नियंत्रित रहती है, खाद्यान्न की उपलब्धता बनी रहती है तथा देश की अर्थव्यवस्था में स्थिरता आती है।

17. आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला

कृषि उत्पादन बढ़ने से देश खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनता है तथा आयात पर निर्भरता कम होती है।

18. महिलाओं के सशक्तिकरण में योगदान

ग्रामीण महिलाओं की बड़ी संख्या कृषि कार्यों में भाग लेती है। स्वयं सहायता समूह, डेयरी एवं बागवानी के माध्यम से महिलाओं की आय बढ़ती है और वे आर्थिक रूप से सशक्त बनती हैं।

19. कृषि और सतत विकास (Sustainable Development)

जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, फसल चक्र, जल संरक्षण तथा मृदा संरक्षण जैसी तकनीकें कृषि को पर्यावरण के अनुकूल बनाती हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण करती हैं।

20. राष्ट्रीय विकास का आधार

किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति तभी संभव है जब उसकी कृषि मजबूत हो। कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र एक-दूसरे के पूरक हैं। इसलिए कृषि का विकास संपूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास की कुंजी है।

भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याएँ

- वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता
- छोटे एवं बिखरे हुए भूमि जोत
- सिंचाई की कमी
- आधुनिक तकनीक का सीमित उपयोग
- उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग
- किसानों को उचित मूल्य न मिलना
- भंडारण सुविधाओं की कमी
- प्राकृतिक आपदाएँ
- जलवायु परिवर्तन
- कृषि ऋण की समस्या
- विपणन व्यवस्था की कमजोरी
- कृषि के विकास हेतु सुझाव
- आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा दिया जाए।
- सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराए जाएँ।
- किसानों को सस्ती ऋण सुविधा दी जाए।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को प्रभावी बनाया जाए।
- कृषि विपणन प्रणाली में सुधार किया जाए।
- कोल्ड स्टोरेज एवं गोदामों का निर्माण बढ़ाया जाए।
- फसल बीमा योजना का विस्तार किया जाए।
- जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जाए।
- कृषि अनुसंधान और डिजिटल तकनीक का उपयोग बढ़ाया जाए।
- किसानों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
- कृषि निर्यात को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल भोजन उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि रोजगार, राष्ट्रीय आय, औद्योगिक विकास, विदेशी व्यापार, ग्रामीण विकास, सामाजिक स्थिरता तथा पर्यावरण संरक्षण का भी प्रमुख आधार है। आज आवश्यकता है कि कृषि को आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक अनुसंधान, सिंचाई, बेहतर विपणन व्यवस्था तथा प्रभावी सरकारी नीतियों से और अधिक सशक्त बनाया जाए। जब कृषि समृद्ध होगी, तभी किसान समृद्ध होंगे; किसान समृद्ध होंगे, तभी गाँव समृद्ध होंगे; और जब गाँव समृद्ध होंगे, तभी भारत वास्तविक अर्थों में विकसित, आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र बन सकेगा। इसलिए कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़, आधारशिला तथा राष्ट्र की समृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है।